International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-01-2025, Accepted: 19-02-2025, Published: 06-03-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 55-56

अनुवाद की चुनौतियॉ

प्रा.मनिषा रामचंद्र गाडीलकर
हिंदी विभाग, श्री मुलीकादेवी महाविद्यालय, निघोज, पारनेर, अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
भाषा हमारे जीवन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलुओं में से एक है।यह मनुष्यों के बीच आपसी संवाद का मूलभूत माध्यम है। भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन भाषा विज्ञान कहलाता है। भाषा का उद्देश्य आंतरिक विचारों और भावनाओं को व्यक्त करना, जटिल एवं गूढ़ विषयों को समझना, दूसरों के साथ संवाद स्थापित करना, अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति करना आदि हैं। भाषा के मौखिक, शारीरिक, सांकेतिक आदि कई रुप हैं। एक अनुमान के अनुसार विश्व में लगभग पॉच से सात हजार भाषाएँ हैं। स्वाभाविक है कि यह सभी भाषाएँ सीखना और समझना किसी भी व्यक्ति के लिए संभव नही हैं। लेकिन एक–दूसरे से संपर्क और संवाद करना है तो सभी मनुष्यों की बुनियादी आवश्यकता है। अतः ऐसा कोई तरीका होना चाहिए, जिसके द्वारा एक–दूसरे की भाषाएँ न समझने वाले लोग भी आपस में संवाद कर सकें और अन्य भाषाओं में लिखे पत्रों, साहित्य आदि को भी पढ सकें, इसके लिए अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं। अनुवाद दो भाषाओं को जोडनेवाला सेतू जैसा हैं। और इसकी सहायता से लोग अन्य भाषाओं की सामग्री को अपनी भाषा में प्राप्त कर पाते हैं।

मूल शब्दः भाषा, अनुवाद का अर्थ, अनुवाद चिंतक, परिभाषाएँ

अनुवाद का अर्थ

'अनुवाद' यह शब्द संस्कृत का यौगिक शब्द है जो 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' के संयोग से बना है। संस्कृत के 'वद्' धातू में 'घत्र' प्रत्यय जोड देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रुप है 'वाद'। 'वद्' धातु का अर्थ है 'बोलना' या 'कहना'और 'वाद'का अर्थ हुआ 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'।

अनुवाद के लिए हिंदी में प्रयुक्त होनेवाले शब्द है, छाया, उल्था, भाषांतर आदि। अन्य भारतीय भाषाओं में 'अनुवाद' के समानान्तर प्रयोग होनेवाले शब्द है– भाषान्तरण (संस्कृत, कन्नड, मराठी) तर्जुमा (कश्मीरी, सिंधी, उर्दू), विवर्तन, तज्जुमा (मलयालम), मोवियेचण्यु (तालिम), अनुवादम (तेलगु), अनुवाद (संस्कृत, हिंदी, असमिया, बांग्ला, कन्नड, ओडिसा, गुजराती, पंजाबी सिंधी)। अंग्रेजी विद्वान मोनियर वीलियम्स ने, "सर्वप्रथम अंग्रेजी में 'ज्तंदेसंजपवद' शब्द संस्कृत के 'अनुवाद'शब्द की 'भॉति, लैटिन के 'जतंदे' तथा 'संजपवद' के संयोग से बना है, जिसका अर्थ, 'पार ले जाना'। यहॉ एक स्थान बिंदू 'स्त्रोत–भाव या `वनतबम स्ंदहनंहम' है तो दूसरा स्थान बिन्दु 'लक्ष्य भाषा' या 'ज्तंहमज स्ंदहनंहम' हैं।"[1]

अनुवाद की परिभाषाएँ

अनुवाद के पूर्ण स्वरुप को समझने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्न रुप में है–

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी– "किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दुसरी भाषा में भाषान्तरण करना अनुवाद है, दूसरे शब्दों में एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा संम्भव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।"[2]
2. नाइडा– "अनुवाद का तात्पर्य है, स्त्रोत–भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य, संदेश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।"[3]
3. देवेन्द्रनाथ शर्मा–''विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रुपान्तरित करना अनुवाद है।''[4]

इस प्रकार एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है।

अनुवाद की चुनौतियॉ : अर्थ एवं स्वरूप

अनुवाद कार्य को लेकर विभिन्न अनुवादक और अनुवाद चिंतक अपनी राय व्यक्त करते रहे हैं। सर्जनात्मक साहित्य विशेष तौर पर कविता के अनुवाद के संदर्भ में तो अनुवाद को लगभग असंभव कार्य माना जाता रहा है। अनुवाद की चुनौतियों से तात्पर्य अनुवाद के दौरान अनुवादक के सामने आनेवाली समस्याओं से है। बाहरी तौर पर यह लग सकता है कि अनुवाद में केवल एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में अंतरित कर देना है। प्रत्येक पाठ की प्रकृति, उसकी भाषा,पाठ की संस्कृति, कथ्य और शैली सभी के प्रति संवेदनशील होकर ही बेहतर अनुवाद संभव है। अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष अनेक चुनौतियॉ होती है जिनका सामना करते हुए उन्हें मूलभाषा और लक्ष्यभाषा दोनों के प्रति न्याय करना होता है और पाठ की मूल आत्मा को बचाना होता है। अनुवाद में अनुवादक से केवल दो भाषाओं के ज्ञान की अपेक्षा ही नहीं होती अपितु इन दो भाषाओं के साथ–साथ अनुवादक को दो संस्कृतियो, दो संदर्भो तथा दो विभिन्न परिवेशों की भी जानकारी होनी चाहिए। इस सांस्कृतिक विविधता के अंतर्गत वे सभी सभ्यतागत तथा सांस्कृतिक विकास के तत्व आ जाते है,जिनके आधार पर ये दोनों संस्कृतियॉ भिन्न है। इसी भाषायी और सांस्कृतिक विविधता के कारण विभिन्न संस्कृतियों के बीच अनुवादक के सामने अनुवाद्यता की समस्या आती हैं। ऐसी स्थिति में अनुवादक को अनुवाद कर्म के दौरान कदम–कदम पर विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पडता हैं। वह निम्न रुप में –

विषय–वस्तु के स्तर पर

जब हम विषय–वस्तु की बात करते हैं तो उसके दायरे में साहित्यिक और साहित्येतर सभी आते है। जैसे – सर्जनात्मक साहित्य, कार्यालयीन साहित्य, विधि साहित्य, विज्ञान सम्बन्धीसाहित्य आदि। ऐसे मौलिक साहित्य के अनुवाद केलिए अनुवादक को भाषा के साथ विषय का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए। साहित्य के संदर्भ में बात करें तो विषय की विविधता कई प्रकार की हो सकती है, अस्मिता विमर्श के साहित्य में आने से अस्मितावादी साहित्य की शुरुआत हुई। हर अस्मिता के भोगे हुए अपने अनुभव होते है, इन अनुभवों के मौलिक लेखन ने भाषा

को कई नए शब्द दिए हैं। किंतु इनके अनुवाद के लिए लक्ष्य भाषा में उचित पर्याय उपलब्ध न होने की स्थिति में अनुवादक के सामने एक समस्या खडी हो जाती है, यह समस्या भी दो प्रकार की है– एक लक्ष्य भाषा में उचित पर्याय न मिल पाने से अनुवाद संभव नहीं हो पाता है,दो यदि पर्याय मिल भी जाएं तो अनुवाद में एकरूपीकरण की समस्या पैदा करती है। जिससे ऐसा अनुवाद सामने आ पाता है जो भाषा का मानक रूप है जबकि अस्मिता केंद्रित साहित्य की विशेषता उसकी अन्य मुख्य धारा के साहित्य की विषमता है। ऐसे में अनुवादक अनुवाद्यता की विकट समस्या से जूझते रहते हैं। जैसे कि, ''तमिल लेखिका बामा का संगति, बांग्ला रचनाकार बेबी हालदार का आलो आंधारि, फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आंचल, श्रीलाल शुक्ल का राग दरबारी, कवयित्री निर्मला पुतुल का नगाडे की तरह बजते हैं शब्द, राकेश कुमार सिंह का पठार पर कोहरा।''[5] आदि इसी कृष्णा सोबती का जिंदगीनामा और मित्रो मरजानी शुद्ध पंजाबी का पुट लिए हिंदी रचना है जिसके अनुवाद में अनुवादक को कई शब्दों और अभिव्यक्तियों में अननुवाद्यता की समस्या से जूझना पडता है। इनके विषय ठीक अपने समाज और सामाजिक विसंगतियों से निकलकर आते हैं। जैसे – फणीश्वरनाथ रेणु के मैला ऑचल में चार आना लबडी ताडी, रोक साला मोटार गाडी आता है। तब शब्दों के साथ आवश्यक यह भी है कि रचना की मूल वस्तु को समझा जाए

सामाजिक – सांस्कृतिक परिवेश के स्तर पर

1990 के आसपास अनुवाद में आए सांस्कृतिक मोड ने अनुवाद के प्रति पूरी दृष्टि ही बदलकर रख दी। अब अनुवाद केवल भाषायी गतिविधि न रहकर एक सांस्कृतिक गतिविधि हो गया जिसमें अनुवाद की केंद्रीय इकाई भाषा से बदलकर संस्कृति होगई। अनुवाद के प्रति इस बदलते दृष्टिकोण की ओर संकेत करते हुए लेफेवेयर ऑफ बेसनेट अपनी संपादित पुस्तक ″Translator, History and Culture″ में लिखते हैं –

"Now the questions have been changed, The object of study has been redefined what is studied is teÛt embedded within its network of both source and target cultural signs."[6]

स्पष्ट है कि यह सांस्कृतिक मोड केवल अनुवाद में ही नहीं, अपितु मानिविकी से संबंधित सभी विषयों, जैसे – भाषाविज्ञान, मानवविज्ञान, इतिहास, साहित्य, भूगोल आदि सभी में देखा गया। अनुवाद की मूल इकाई संस्कृती हो गई, इसलिए अनुवाद करते समय आनेवाली कठिनाइयों या दुविधाओं को भी केवल भाषागत दृष्टि से देखा जाना अपर्याप्त लगने लगा। कोई भी साहित्यिक रचना अपने परिवेश में रची–गुंथी होती है। उसका समाज, उसकी संस्कृति उस पर इस कदर हावी होती है। कि उसे पढने मात्र से आप उस समाज के रहन–सहन और चिंतन पद्धति का अनुमान लगा सकते हैं। जैसे – धर्मवीर भारती का गुनाहों का देवता सभी रचना हमें अपने समय, परिवेश, चिंतन पद्धति से अवगत कराती हैं।

अभिव्यक्ति के स्तर पर

अभिव्यक्ति से तात्पर्य है वस्तु को अभिव्यक्त करने की युक्ति। ज्ञानपरक साहित्य के संदर्भ में कहें तो चाहे वह कार्यालयी साहित्य हो, विधि साहित्य हो, वैज्ञानिक साहित्य हो या फिर समाजशास्त्रीय साहित्य हो इन सबकी अभिव्यक्ति की अपनी एक खास प्रयुक्ति होती है। भाषा की तीन शब्द शक्तियों–अभिधा, लक्षणा, व्यंजना में से सर्जनात्मक साहित्य के संदर्भ में अभिधा को चाहे कितना भी कमतर आंका जाए किंतु ज्ञानपरक साहित्य में अमिधा शब्द शक्ति ही सर्वोचित मानी जाती है। ज्ञान की इन सभी शाखाओं में न तो रचनाकार और न ही अनुवादक किसी प्रकार की छूट ले सकते हैं। इन क्षेत्रो में अननुवाद्यता की समस्या तब आती है जब किसी नई अवधारणा से जुडे ऐसे शब्दों का अनुवाद करना पडे जो कि लक्ष्य भाषा की संस्कृति में उपलब्ध नहीं हे। ज्ञानपरक साहित्य की विभिन्न शाखाओं में पारिभाषिक शब्दावली की संकल्पना का अपना महत्व और विशिष्ट स्थान होता है। इस प्रकार के साहित्य का अनुवाद करते समय इन पारिभाषिक शब्दावलियों में पर्याय न मिलने पर अनुवादक के सामने विकट समस्या इस प्रकार खडी हो जाती है कि यहाँ वे सर्जनात्मक साहित्य की तरह छूट नहीं ले सकते और उन्हें शब्द विशेष के उचित पर्याय की आवश्यकता होती है। इसी तरह स्रोतभाषा की वाक्य संरचना, शब्द चयन, लोकोक्ति–मुहावरे, परिवेश, रूपरचना आदि में भी अनुवादक को तालमेल बैठाने की आवश्यकता होती है। इसीलिए यह आवश्यक है कि अनुवादक को दो भाषाओं के ज्ञान के साथ उन दोनों भाषाओं की संस्कृतियों का पर्याप्त ज्ञान हो।

शैली के स्तर पर

सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में यह समस्या शैली के स्तर पर भी आती है। उदाहरणस्वरूप यदि लक्ष्य भाषा की संस्कृति स्रोतभाषा की संस्कृति के किसी पाठ को एक या एकाधिक कारणों से अपनी संस्कृति में लाना तो चाहती हे लेकिन शैलीगत कठिनाई के चलते उसे समस्याओं का सामना करना पडता है। तब वे शैली की सीमाओं को तोडकर कथ्य का अनुवाद कर लेते हैं। जैसेदृ रामायण और महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथों के अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में हुए अनुवादों का यहां उल्लेख किया जा सकता है। कविता के अनुवाद में इस तरह की समस्या अधिकआती है जहाँ स्रोतभाषा की संस्कृति में लय, छंद, अलंकार, गति आदि के अपने पैमाने तयहोते हैं। लक्ष्यभाषा के भाषायी और सांस्कृतिक ढॉचे में ढालना अनुवादक केलिए बहुत बड़ी चुनौती है। यहाँ फिर यह सवाल उठता है कि पाठ का अनुवाद करने के पीछे अनुवादक का उद्देश्य क्या है। यदि केवल कथ्य का अनुवाद करना है तो उसे विधा का बंधन तोडकर भी किया जा सकता है लेकिन यदि विधागत अनुवाद करना है तो अनुवादक को चुनौती लेनी ही होगी। साहित्य और विधाओं का इतिहास बताता है कि अनुवादकों ने इस प्रकार की चुनौतियाँ ली हैं। जैसे– हायकू, सॉनेट जैसी कविता।

सारांश

अनुवादक को अनुवाद करते समय कई स्तरों पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियॉ विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं। जैसे–भाषिक स्तर पर, सामाजिक दृसांस्कृतिक स्तर पर, अभिव्यक्ति तथा शैली के स्तर पर आदि। अनुवादक को ऐसे में अनुवाद का उनका अपना अर्जित अनुभव तथा अनुवादक की अपनी वैचारिकता बेहद काम आती है। अनुवाद के दौरान आनेवाली इन समस्याओं के समाधान के लिए हमें यह समझना होना कि अनुवाद की ये चुनौतियॉ केवल भाषागत ही नही हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य – रीतारानी पालीवाल – वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.10
2. अनुवाद विज्ञान– डॉ. भोलानाथ तिवारी–चौखांबा औरीयांतालिया २०१६ वाराणसी. पृ.15
3. अनुवाद सिध्दान्त की रुपरेखा– डॉ. सुरेश कुमार – Chaukhamba Orientalia–वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली. पृ. 48
4. अनुवाद विज्ञान– डॉ. भोलानाथ तिवारी –Chaukhamba Orientalia–वाराणसी पृ.15
5. अनुवाद: अवधारणा और आयाम – सुरेश सिंहल – संजय प्रकाशन, पृ. ५१
6. Translation History culture – Susan Bassnett and Andre Leferevere, London, Page No-8